राग पूरिया कल्याण

संक्षिप्त परिचय

- थाट–मारवा
- जाति–सम्पूर्ण
- वादी–गन्धार
- संवादी–निषाद
- स्वर–रे कोमल, म तीव्र तथा अन्य शुद्ध
- न्यास–ग, प, नि
- गायन समय–सायंकालीन सन्धि प्रकाश
- समप्रकृति राग–पूरिया धनाश्री, पूर्वांग में मारवा व पूरिया और उत्तरांग में कल्याण

- आरोह–ऩि, रे, ग, म प ध नी सां।
- अवरोह–सां, नि धनि, ध प, म ग, रे सा।
- पकड़– प ध नि ध प, म ग, रे म ग, रे सा।

विशेषता

- इसमें पूरिया और कल्याण इन दो रागों का मिश्रण है। इसके पूर्वांग में पूरिया और उत्तरांग में कल्याण है।
- इसमें षडज की उपेक्षा करते हुए इसकी चलन अधिकतर निषाद से प्रारम्भ होती है जैसे .नि रे ग।

  इसी प्रकार उत्तरांग में पंचम की उपेक्षा करके म ध नी सां, अधिकतर प्रयोग करते है।
- यह राग सन्धिप्रकाश तो है ही, परमेल प्रवेशक राग भी है। कारण स्पष्ट है कि यह राग मारवा थाट से कल्याण थाट के रागों में प्रवेश कराता है।
- शास्त्रीय दृष्टि से इसका गायन–समय सायंकाल 7 बजे के पूर्व होना चाहिए, किन्तु गायक लोग रात्रि में 10 बजे के आस–पास तक राग कल्याण के समय में इसे गाते बजाते है।
- इस राग का रिषभ मारवा के समान स्वतन्त्र नहीं लगता, बल्कि पूरिया के समान इसमें गन्धार प्रमुख और रिषभ गौड़ रहता है। रिषभ बढ़ाने से पूरिया कल्याण के स्थान पर मारवा कल्याण की सृष्टि होगी।

- इसमें कोमल रिषभ, पंचम और धैवत स्वरों का बड़ा महत्व है। बीच–बीच में इन स्वरों का प्रयोग आवश्यक है। ये स्वर पूरिया और कल्याण रागों का सुन्दर समन्वय करते है। कल्याण राग से बचाने के लिये कोमल रिषभ का प्रयोग आवश्यक है, पूरिया से बचाने के लिये पंचम और पूरिया धनाश्री से बचाने के लिये शुद्ध धैवत का प्रयोग आवश्यक है।
- कुछ लोग पूर्वा कल्याण और पूरिया कल्याण को एक समझते है, किन्तु दोनों बिल्कुल अलग है। पूर्वा कल्याण में पूरिया, मारवा और कल्याण का मिश्रण है और पूरिया कल्याण में पूरिया और कल्याण का मिश्रण है।

- प्रस्तुत राग के पूर्वांग में सा, नि़ ध़ नि़, रे ग, रे सा, नि़ रे म ग, नि रे सा, नि़ ध़ नि़ इत्यादि स्वरों से राग पूरिया और म ध नी, नी ध प, सां, नी ध नी, ध प, म ध नी ध प, म ध प, इत्यादि स्वरों से कल्याण राग स्पष्ट होता है। इन दोनों रागों के इन स्वर समूहों को पारस्परिक मिलाने से पूरिया कल्याण का आविर्भाव होता है। नि़ रे ग, म ध प, म प म ग, रे ग रे म ग इस स्वर समूह से यह राग तत्काल ही पहिचाना जाता है। रे ग रे म ग इस राग की विशेष स्वर संगति है।
- प्रस्तुत राग का विस्तार मन्द्र, मध्य और तार तीनों ही सप्तकों में होता है।

धन्यवाद

डॉ0 रागनी स्वर्णकार